## थाट-मारवा

स्वर- सा रे॒ ग मे प ध नि सां

## राग-ललित

यह राग मारवा थाट से उत्पन्न होता है। पंचम वर्ज्य होने के कारण इसकी जाति षाडव मानी जाती है। वादी स्वर शुद्ध मध्यम और संवादी स्वर षड्ज है। उत्तरांगप्रधान राग होने के कारण गायन-समय रात्रि का अन्तिम प्रहर माना जाता है। इस राग में दोनों मध्यमों का प्रयोग होता है। ध मे ध मे म- यह स्वर-समुदाय बार-बार इसमें दिखाई देता है। इस स्वर-समुदाय से तथा नि़ रे॒ ग म, मे म ग- इन स्वरों से यह राग तत्काल ही पहचानने में आ जाता है। प्रातःकाल में यह एक बिल्कुल स्वतन्त्र रूप है। कुछ ग्रन्थों में यह राग कोमल धैवत युक्त मिलता है, किन्तु अपने यहाँ तीव्र धैवत ही लिया जाता है।

आरोह- नि़रे॒गम, मेमग, मेध, सां
अवरोह- रे॒ं निध, मेधमेमग, म रे॒, सा
पकड़- नि़रे॒गम, धमेधमेम, ग

## स्वरमालिका

राग- ललित, ताल-त्रिताल (मध्यलय)

### स्थायी

| | | | |
|---|---|---|---|
| नि़ रे॒ ग रे॒ | सा - नि़ रे॒ | ग - म - | - मे म ग |
| ० | ३ | x | २ |
| - ध मे ध | सां - रे॒ं नि | ध नि ध मे | ध मे म ग |
| ० | ३ | x | २ |

### अन्तरा

| | | | |
|---|---|---|---|
| ग ग मे ध | सां - सां - | नि रे॒ं सां - | गं गं रे॒ं सां |
| ० | ३ | x | २ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| सां - सां -<br>० | नि रें नि ध<br>३ | मे ध नि ध<br>× | मे ध मे म<br>२ |
| - म ग ग<br>० | नि ध मे ग<br>३ | नि नि ध मे<br>× | म ग रे सा<br>२ |
| नि़ सा ग ग<br>० | मे ध रें नि<br>३ | ध नि ध मे<br>× | ध मे म ग<br>२ |

## छोटा ख्याल

राग- ललित, ताल- त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी- बलि-बलि जाऊँ मुखारबिंद के।
सुन्दर की छबि मोरे मन बस गई, का कहुँ अपने अनंद को पार॥

अन्तरा- मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, गल बैजन्ती सोहत माल।
शंख चक्र और गदा पदमसंन, हररंग ललित सरूप अपार॥

## स्वरलिपि

### स्थायी

| | | | |
|---|---|---|---|
| (सा)नि़ रे ग रे<br>ब लि ब लि<br>० | सा - ग म<br>जा ऽ उँ मु<br>३ | (ग)म - म (ग)म<br>खा ऽ र बिं<br>× | - मे (ग)म ग<br>ऽ द के ऽ<br>२ |
| - ध मे ध<br>ऽ सुं द र<br>० | सां - सां सां<br>की ऽ छ बि<br>३ | सां सां (रें)नि ध<br>मो रे म न<br>× | (ध)मे ध सां सां<br>ब स ग इ<br>२ |
| सां - सां सां<br>का ऽ क हुँ<br>० | (सां)रें नि ध ध<br>अ प ने अ<br>३ | (ध)मे - ध (ध)मे<br>नं ऽ द को<br>× | ध मे - मग<br>ऽ पा ऽ रऽ<br>२ |

## अन्तरा

| | | | |
|---|---|---|---|
| - ध मे ध<br>ऽ मो र मु<br>0 | सां सां सां सां<br>कु ट म क<br>३ | सां - सां सां<br>श ऽ कृ त<br>× | सां<br>रें - सां सां<br>कुं ऽ ऽ ल<br>२ |
| सां सां सां -<br>ग ल बै ऽ<br>0 | रें<br>नि - ध -<br>जं ऽ ती ऽ<br>३ | ध<br>मे - ध नि<br>सो ऽ ह त<br>× | ध<br>मे ध मे म<br>मा ऽ ऽ ल<br>२ |
| ग मे<br>म - म ग<br>शं ऽ ख च<br>0 | - ग नि नि<br>ऽ क्र औ र<br>३ | ध<br>मे ग - मे<br>ग दा ऽ प<br>× | ग रे सा सा<br>द म स न<br>२ |
| सा<br>नि रे ग ग<br>ह र रं ग<br>0 | ध<br>मे ध सां सां<br>ल लि त स<br>३ | रें प<br>नि - ध मे<br>रू ऽ प अ<br>× | ध मे - मग<br>ऽ पा ऽ रऽ<br>२ |

## तानें

### राग - ललित

### स्थायी

(१) ऩिरे गरे सासा ऩिरे | गम मेम गरे सा-
×  २

(२) ऩिरे गम धनि निध | मेध मेम गरे सा-
×  २

(३) ऩिरे गम धनि रेंनि | धमे मेम गरे सा-
×  २

(४) निरें गंगं रेंसां निध | मेध मेम गरे सा-
×  २

(५) ऩिरे गम रेग मेध | गमे धनि मेध निसां | धनि सांरें
0  ३  ×

गंरें सांनि | धमे मेम गरे सा-
२

(६) निरे गम मग मम | गग रेरे सासा निरे | गम धनि निध निनि
0 ३ X

| धध मम गग रेसा
२

अन्तरा

(१) सांनि धम गरे सा- | निरे गम धनि सां-
X २

(२) मध निसां निध मध | मम गम धनि सां-
X २

(३) निरे गम रेग मध | गम धनि मध सां-
X २

(४) रेंसां निध मध मम | गम धनि सांरें सां-
X २

(५) सांरें सांरें निसां निसां | धनि धनि मध मध | धम मम गरे सा-
0 ३ X

| निरे गम धनि सां-
२

Date
Page

# बड़ा ख्याल

राग- ललित, ताल- त्रिताल(विलम्बित)

स्थायी- रैन का सपना री मैं कासें कहूँ री॥रैन......

अन्तरा- सोवत-सोवत आँख खुली जब, कोउ न पायो अपना॥रैन.....

## स्वरलिपि

### स्थायी

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | प<br>मेग<br>रैन<br>० |
| सा<br>नि रे - गम<br>का ऽ ऽ सप<br>३ | मे - म गम<br>ना ऽ ऽ ऽऽ<br>× | म<br>ग म गम गमन<br>री ऽ ऽऽ ऽऽऽ<br>२ | (म) - ग -<br>मैं ऽ ऽ ऽ<br>० |
| म ध<br>ग - मे ध<br>का ऽ सें क<br>३ | ध<br>मे ध मे म<br>हूँ ऽ ऽ ऽ<br>× | ग - म म<br>री ऽ ऽ ऽ<br>२ | मेमेमग मेग रे, मेग<br>ऽऽऽऽ ऽऽ ऽ, रैन<br>० |

### अन्तरा

| | | | |
|---|---|---|---|
| म ध<br>ग - मे ध<br>सो ऽ व त<br>३ | ध<br>सां - रें सां<br>सो ऽ व त<br>× | सां<br>नि - रें गं<br>आँ ऽ ख खु<br>२ | ध<br>सांनि रेंनि मे ध,मेम<br>लीऽ जऽ ब ऽ,ऽऽ<br>० |
| मे ध<br>ग - मेधनिसां सां<br>को ऽ उऽऽऽ ऽन<br>३ | नि<br>सांनि रें नि ध<br>पाऽ ऽ यो ऽ<br>× | ध ध<br>मे मे ध मे<br>अ प ऽ ना<br>२ | ग<br>म मेमेमग मग रे,मग<br>ऽ ऽऽऽऽ ऽऽ ऽ,रैन<br>० |